CHOTEIN

POETRY BY

SOZ NAJIBABADI

Cell No. 93902 97893

चोटें - काव्य संग्रह

चोटें

सोज़ नजीबाबादी

काव्य - संग्रह

चोटें

सोज़ नजीबाबादी

काव्य–संग्रह

चोटें

सोज़ नजीबाबादी

तमहीद पब्लिकेशन

Blank

प्रकाशक	:	'तमहीद' पब्लिकेशन्स 9-14-124 अहमद पुरा निज़ामाबाद, तिलंगाना
टाइप सैटिंग	:	बेनज़ीर प्रिन्टर्स, नजीबाबाद (उ.प्र.)
आवरण	:	मुहम्मद ज़हीरूद्दीन
मुद्रक	:	दायरा प्रेस, छत्ता बाज़ार, हैदराबाद
संस्करण	:	प्रथम 1917
मूल्य	:	एक सौ पचास रूपये

CHOTEIN

BY SOZ NAJIBABADI

श्री राम अवतार गुप्ता ''मुज़्तर''

संन्दीलवी

के नाम

परिचय

नाम	:	तौसीक़ हसन ख़ाँ
साहित्यिक नाम	:	'सोज़' नजीबाबादी
जन्म स्थान	:	नजीबाबाद, जनपद–बिजनौर (उ.प्र.)
जन्म तिथि	:	12 मार्च 1953
कृतियाँ	:	''अज़राब'' (उर्दू) ''चोटें'' (हिन्दी)
सम्पर्क	:	दफ्तर तमहीद 9–14–124 अहमदपुरा निज़ामाबाद 503001 तिलंगाना
मोबाइल	:	09390297893

हमको ग़मे हयात के काँटों पे डाल के
लिखवाये हम से वक़्त ने नग़्मे कमाल के

अनुक्रम

		पृष्ठ सं0
1	भूमिका	5
2	धन्यवाद	18
3	मुनाजात	20
4	(नज़्मे)	22
5	आज का सच	24
6	नग़्मा	25
7	सदा-ए-दिल	27
8	पैग़ाम	28
9	कहानी	29
10	उल्लू की शादी	31
11	एक याद	33
12	सोच	37

13	कतबा	39
14	बेघरी	41
15	अम्मी	42
16	सई-ए-रायगाँ	43
17	मेरे हम दम	44
18	फिर आऊँगा	45
19	कम नहीं	47
20	एक ही रास्ता	48
21	इनकेशाफ़	49
22	एक ख़याल	50
23	(गज़लें)	52
24	ताबा मन्ज़र है अजब धुन्द	54
25	किसी दिन इस तरह	55
26	हादेसा बन बन के	56
27	हम को ग़मे हयात के काँटो पे डाल के	57
28	गुज़रता पल गढ़े में मौत के	58

29	मौत का मन्शा यही है	59
30	सर पर इस बदली की छाओं	60
31	अगर हालात को देखो तो	61
32	अब तो ये आलम है	62
33	समझ़ये अब तो इन आँखों में	63
34	मुक़ीम जैसे के ख़ुश्बू	64
35	औराके किताबे दिल	65
36	और तो सब हैं मेरे नाम से	66
37	कभी जुदा दो बदन हुए तो	67
38	हाथों के लिये बर्गे हिना	68
39	अब ख़िज़ाँ आए या बहार आये	69
40	खिल के फूलों ने	70
41	हयात अक्सर मताए ऐश	71
42	अब सदा कोई नहीं सुनता	72
43	बे दिली से इस खराबे में	73
44	बहते पानी की तरह	74

45	लोग इस तरह भी आज यहाँ	75
46	इन्साँ हवस के रोग का मारा है	76
47	मन्ज़िल की तरफ जाने से	77
48	बोली ग़ुरूर की वो बशर बोलने लगा	78
49	परखले उस को	79
50	गर्म लू किस को	80
51	बारहा जीते हुए मोर्चे	81
52	लोगों का तो है ये उसूल	82
53	दौलत, इज़्ज़त, इल्म अगर है	83
54	मैदाँ में अब तो आप	84
55	नज़्में दुनया संभालने को उठो	85
56	हयात बादे फ़ना अब	86
57	क़वी हो इतना तो	87
58	मुतफ़र्रिक़ात	88
59	शायरों और विद्वानों की राय	90

भूमिका

हुआ यह कि पश्चिम के एक उल्लू के बेटे को पूरब के एक उल्लू की बेटी से प्यार हो गया इतना कि वह अपना स्वाभाविक उल्लूपना छोड़कर दीवाने आदमियों जैसी हरकतें करने लगा। उल्लू के बाप ने जब यह देखा, तो उसे बड़ी चिन्ता हुई और उसने तय किया कि बेटे की शादी के लिए लड़की के बाप से बात की जाए। वह तीन चार समझदार उल्लू साथियों को लेकर पूरब के उल्लू के यहाँ पहुँचा और दोनों पक्षों में रिश्ता तय करने का उपक्रम शुरू हो गया। बात बढ़ते-बढ़ते इस मुद्दे पर पहुँच गई कि मेहर तय कर ली जाए। पूरब के उल्लू ने प्रस्ताव किया कि अगर यह शादी होनी ही है,

तो पश्चिम के उल्लू को 'मेहर'[1] के रूप में एक सौ उजड़े हुए गाँव देने पड़ेंगे। वह सोच रहा था कि यह शर्त बहुत भारी है और इसके पूरा न कर पाने से उसकी लड़की दूर देश जाने से बच जाएगी। लेकिन हुआ इस का उल्टा शादी की बात करने आये पश्चिम के उल्लुओं ने तपाक से जवाब दिया कि निहायत छोटी सी यह शर्त उनके लिए कोई मायने नहीं रखती। पूरब का उल्लू इसकी कोई चिन्ता न करे। इस का कारण यह बताया गया कि जब भी उन उल्लुओं के पश्चिमी हुक्मरान खून बहाने के अपने शौक़ के चलते कहीं पर बमों की बरसात करेंगे तभी वे लोग उजड़े हुए एक सौ गाँव क्या उस से कहीं बहुत बड़ी उजाड़ दुनया उनकी लड़की को दे देंगे।

हुआ यह कि पुराने ज़माने में एक ग़रीब माँ ने अपने ना समझ बेटे को शेर और बकरी की लोक कथा सुनाई उस के अनुसार शेर और बकरी को संयोग वश एक नाव में यात्रा करनी पड़ रही थी जैसा कि जंगल में शेर और बकरी का रिश्ता है, उसे ईमानदारी से निभाते हुए शेर के मुँह में पानी आने लगा थोड़ी देर तो वह अपने मन पर नियन्त्रण किये रहा–

1– वह धन सम्पत्ति जो मुसलमानों में विवाह के समय वर की ओर से वधु को देना निश्चित किया जाता है।

लेकिन ऐसा भला कितनी देर चल सकता था....। आखिर शेर ने बकरी को अपने पेट में पहुँचाने का निश्चय कर लिया। यहाँ शेर के सामने एक धर्म संकट आया वह यह कि इस समय वह जंगल में नहीं था संकट के समय नाव में था। उसी नाव में संकट ग्रस्त बकरी भी थी और उसके कुछ सभासद भी थे ऊपर से कुछ प्रजा जन भी नदी के किनारे-किनारे चलते हुए अपने राजा की नाव को देख रहे थे। इस दशा में बकरी पर सीधा हमला करने से प्रजा में खलबली मच सकती थी। सब जानते हैं कि राजा अगर न्याय के सुन्दर आसन पर विराजमान न दिखे, तो निर दवंद्व राजतत्व ख़तरे में पड़ जाता है। वह इस धर्म संकट से उबरने का उपाय खोजने लगा और पलक झपकते ही वह उपाय उसे मिल भी गया। शेर बोला, यह बकरी हमेशा बग़ावत के गीत गाती है और उसे देखते ही शोर मचाना शुरू कर देती है, इस लिए राज्य की रक्षा और प्रजा की भलाई के लिए अनिवार्य है कि इस बकरी को उचित दंड दिया जाए। इतना कहकर वह बकरी की

ओर झपटा। निरीह बकरी हड्डियों तक काँपते हुए प्राणों की भीख माँगने लगी, लेकिन राजा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा शेर एक ही झपट्टे में बकरी को चट कर गया। यह कहानी सुना कर गरीब माँ ने कहा ''हे मेरे बेटे! याद रखना संसार में सम्मान के साथ जीने का अधिकार केवल शक्तिशालियों के पास सुरक्षित है, जो निरीह और कमज़ोर है उसके लिए अपमान और आत्म हीनता का जीवन प्रतीक्षा करता रहता है''...।

हुआ यह कि एक यौवनोद्दीप्त युवा रेल यात्रा के लिए स्टेशन पहुँचा। उसने देखा कि प्लेट फ़ार्म पर एक स्त्री अपने नन्हे शिशु को अंक में संभाले वात्सल्य में निमग्न उसकी पीठ पर हाथ फेर रही है और बीच बीच में उस युवा की ओर स्वप्निल दृष्टि से ताक रही है। युवा जब उस स्त्री के देखने को अनुभव कर के उसकी ओर देखता है, तो वह लज्जा से दोहरी हो जाती है, लेकिन फिर भी कभी अपने शिशु को और कभी उस युवक को निहारना बन्द नहीं करती। स्वाभाविक रूप से युवा के मन में भी उस स्त्री के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है। वह अपनी स्मृति पर ज़ोर डालकर सोचने लगता है कि कहीं यह स्त्री उसकी कालेज की सहपाठिन शान्ति या फिर उसके गाँव की राधा या कान्ति तो नहीं है । जब उसकी बुद्धि काम

नहीं करती तो वह उस स्त्री से बात करके सही बात जानने का निश्चय करता है। उस के मन में कहीं यह भावना है कि वह उसकी पूर्व परिचिता होगी, तो संभव है, यह परिचय प्रेम में परिणत हो जाये। युवक साहस कर के उस से बात करता है तब वही स्त्री मुस्कान भरे लेकिन धीमे स्वर में कहती है कि 'हे युवा तुम बहुत अच्छे हो तुम्हारा यौवन अनुपमेय है, मैंने जैसे ही तुम्हें देखा, मेरे हृदय में यह भावना उत्पन्न हुई कि बड़ा होकर मेरा यह शिशु भी तुम्हारे जैसा ही यौवनोद्दीप्त बनेगा, बस मैं खुली आँखों यही सपना देखते हुए तुम्हें निहार रही थी और अपने भाग्य पर इतरा रही थी'...।

हुआ यह कि एक विद्यार्थी ने स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद कालेज में प्रवेश लिया और उपाधि प्राप्त करने के बाद वहाँ से निकल गया। सोचता था कि जो उपाधि उसे दी गई है वह उसे बहुत बड़ी न सही, कोई छोटी मोटी नौकरी ज़रूर दिलाएगी और जो शिक्षा उसे दी गई है, वह उसे जीवन जीने योग्य बनाएगी। लेकिन उनमें से

कोई बात सच न हुई तमाम उम्र यों ही भटकने के बाद आज उसकी आँखों में कालेज के ख़ूबसूरत लॉन में किसी के साथ देखे गए सपनों की किरचें हैं और सामने उपाधि का वह टुकड़ा, जिससे कफ़न तक मिलने की सम्भावना नहीं....। जीवन के उत्तरार्ध की ओर बढ़ता हुआ कल का यह विद्यार्थी भला कहाँ-कहाँ नहीं भटका उगते सूरज से लेकर ढलते सूरज के बीच उसने बराबर अपनी जिजीविषा को जगाए रखने की कोशिश की, अपने भीतर के मनुष्य को जीवन संघर्ष का अर्थ समझाया, आवेश में भरकर अपने देश की महानता का गीत गुनगुनाया, बर्लिन की दीवार के गिरने पर विश्व को तरह-तरह के वर्गों में बाँटने वाली अन्य दीवारों के गिर कर नष्ट हो जाने की कामना की, कल्पना में ही अपने आस पास बिखरे सामाजिक सम्बन्धों के रस में डूब जाने की वंचना को सहा, सड़क पर गुब्बारे और

गुड़ियाँ बेचने के बाद वहीं खुले आकाश के नीचे सो जाने वाली गृह विहीन लड़की के प्रति सहानुभूति अनुभव की, जीवन से बत रसी करते हुए उसे काँटों भरे निर्जन मार्ग पर अकेला न छोड़ने का निश्चय किया, और एक अंधेरे मोड़ पर उस बूढ़े पेड़ को टकटकी लगाए देखता रहा जो तमाम उम्र धूप सहकर सब को घनी छाया प्रदान करने के बाद आँधी के एक झोंके के साथ ज़मीन पर आ गिरा....।

यह सब जो आप से मैं कह रहा हूँ, वह सोज़ नजीबाबादी के काव्य संग्रह 'चोटें' की रचनाओं में जगह-जगह बिखरा हुआ मिलेगा। आपको लगेगा कि रचनाकार आप से बहुत अपनेपन के साथ बतियाते हुए अचानक आपके कान के पास आकर कुछ ऐसा कह गया, जिसने आप को तो भीतर तक हिला ही दिया स्वयं रचनाकार के जीवन की परतें भी उतार दीं और उस रास्ते पर चलकर ज़मानेभर के साधारण लोगों के बारे में भी बहुत सारे रहस्य खोल गया। उल्लुओं के बीच प्यार के बहाने उसने नव साम्राज्यवाद और सभ्यताओं के बीच संघर्ष की अवधारणाओं को नहीं, बल्कि उन से बनी अगणित चक्कियों में पिसती निरीह जनता युद्धोन्माद

में डूबे महाबली देशों और क़दम-क़दम पर विनाश भोगते विश्व की ओर हमारा ध्यान खींचा है, शेर बकरी की लोक कथा प्राचीनकाल जितनी ही आज के सत्ता तंत्र की वास्तविकता का साक्षातकार कराती है, स्टेशन पर अपने शिशु को अंक में भरे युवक को निहारती स्त्री अद्भुत ढंग से मानव चरित्र के नितांत अनछुए पक्ष का उद्घाटन करती है और शिक्षा से आज के व्यक्ति का संबन्ध हमें भीतर तक झकझोरता है.....।

इस संग्रह के रचनाकार को मैं बहुत निकट से और बड़े लंबे अरसे से जानता हूँ। चालीस पैंतालीस साल पहले में और वह नजीबाबाद (उ.प्र.) के राजकीय इंटर कालेज में साथ पढ़ते थे। फिर साहूजैन महाविद्यालय में भी हम लोग साथ ही पढ़े उन दिनों वह तौसीक़ हसन था और शायरी अपने स्कूली दिनों से ही करने लगा था इंटर कालेज में तथा बाद में डिग्री कालेज में उसकी शायरी अध्यापकों से लेकर छात्रों के बीच चर्चा का विषय बन

गई। उस समय की मंडलीय खेल प्रतियोगिताओं में 'कवि दर बार' का भी आयोजन किया जाता था। मुझे याद है कि इस प्रतियोगिता में तौसीक़ हसन के कारण हमारा कॉलेज हमेशा विजयी होता था इसी काल में कभी उसके नाम के साथ 'सोज़' तख़ल्लुस[1] जुड़ गया। आगे चलकर उसका मूल नाम कहीं गुम हो गया और वह दोस्तों से लेकर लेखक बिरादरी के बीच सोज़ नजीबाबादी के रूप में प्रसिद्ध हो गया। प्रारम्भ में वह उर्दू के साथ ही हिन्दी में भी समान काव्य कौशल का धनी था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी रूचि उर्दू शायरी के क्षेत्र में बढ़ती चली गई। उसने उर्दू में महारत हासिल की वह शायरी की 'उस्ताद' परम्परा का हिस्सा बन गया। नजीबाबाद के आस पास के शायर उसे घेरे रहने लगे, यहाँ तक कि दूरस्थ स्थानों पर रहने के कारण नजीबाबाद आने में असमर्थ नये शायर उसे डाक से अपनी रचनाएं भेजकर 'इस्लाह[2]' की प्रक्रिया से गुज़रने लगे। फ़ारसी, हिन्दी, उर्दू के विशाल काव्य जगत से परिचित

1-उपनाम, 2- त्रुटि निवारण

सोज़ नजीबाबादी उन सब की शक्ति भर सहायता करता रहा, फलतः उसके शागिर्दों[3] की संख्या बढ़ने लगी। इस उपलब्धि ने साहित्य जगत में 'सोज़' के दुश्मन भी खड़े किए।

उर्दू, हिन्दी कोष की प्रस्तावना (24 मई 1936) में आचार्य राम चन्द्र वर्मा ने हमारा ध्यान इस ओर खींचा था कि उर्दू का प्रारंभ तो लशकरों और बाज़ारों में बोली जाने वाली मिश्रित भाषा के रूप में हुआ था, पर आगे चल कर उसे मुलमान बादशाहों, नवाबों और सरदारों आदि का आश्रय प्राप्त हो गया और उसमें प्रायः फ़ारसी और अरबी कविताओं के अनुकरण पर यथेष्ट कविताऐं होने लगीं और वह राज दरबारों और महलों आदि में बोली जाने लगी इसका परिणाम यह हुआ कि सैंकड़ों वर्षों के इस प्रकार के व्यवहार से वह एक बहुत घुटी मंजी और पालिशदार बढ़िया भाषा हो गई, उसमें अनेक ऐसे गुण आ गए, जिन गुणों के योग से कोई भाषा चलती हुई, चटकीली और सुन्दर हो जाती है। (लोक भारती इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित दशम संस्करण 1999 से)

3-शिष्यों

सोज़ की शायरी जितनी आगे बढ़ती गई, व्यापक अध्ययन के कारण उसमें उर्दू ज़बान[4] की ये विशेषताएं समाहित होती चली गईं इसी के साथ आज़ादी के लिए संघर्ष से लेकर समकालीन भारत के मोहभंग तक और उसके प्रभाव से बाद के काल में जिन परिस्थितियों से जीवन का साक्षात्कार हुआ और उसने आम आदमी को जिन अनुभवों से गुज़रने के लिए मजबूर किया वे सब भी सोज़ की शायरी में घुल मिल गए। एक बात यह भी कि तौसीक़ हसन से सोज़ बनने के बीच यह आदमी रोमा-नियत में नहाया रहने वाला, लेकिन सामाजिकि-धार्मिक स्तर पर धुआँधार विद्रोही था। किसी व्यक्ति के चरित्र की इन विशेषताओं का जो प्रभाव उसकी रचना धर्मिता पर पड़ सकता है, वह भी सोज़ की शायरी का अहम हिस्सा है जिसे जाने बिना न सोज़ को समझा जा सकता है और न उसकी रचनाओं को...।

उर्दू शायरी की दुनया का यही 'उस्ताद परंपरा' का

शायर अपने जीवन में तमाम तरह की कठिनाइयों और मुसीबतों का शिकार भी रहा। कालेज जीवन में उसने अपनी उम्र का जो हिस्सा शिक्षा के नाम किया था, उसके बदले मिली उपाधि उसे जीवन यापन का कोई सरल साधन उपलब्ध नहीं करा पाई वैसे इसमें उसका स्वाभिमानी और फक्कड़ स्वभाव भी कम ज़िम्मेदार नहीं है पिता असाधारण रूप से ईमानदार शिक्षक होने के कारण उसके लिए कोई उत्तराधिकार संपत्ति नहीं छोड़ गए, कुछ समय चिकित्सा व्यवसाय से जुड़ कर भी वह रूपया कमाने की तरकीबें भूल, क़स्बे के गरीब लोगों का लगभग मुफ़्त इलाज करता रहा और एक समय अचानक निर्णय लेकर उत्तर भारत से हैदराबाद और वहाँ से निज़ामाबाद चला आया और उर्दू की साहित्यिक पत्रिका को जीवन दे बैठा कोई नहीं जानता कि उसने अपना परिवार किन मुसीबतों में चलाया, हाँ यह ज़रूर है कि वह अपनी बेटियों को बराबर पढ़ाता रहा पत्नी की

ज़रूरतें पूरी करता रहा खुद को भी मरने नहीं दिया और अपनी शायरी को भी ज़िन्दा रखा। यह उर्दू के एक सहज-सरल शायर की जिन्दगी का यथार्थ है। लेकिन क्या हिन्दी के किसी ऐसे ही कवि का जीवन इस से कुछ भिन्न है? नहीं उसका जीवन भी बिलकुल ऐसा ही होता है भारत की दूसरी भाषाओं के रचनाकारों की स्थिति भी इससे कोई अलग नहीं है सच्चाई यह है कि साधारण परिस्थितियों में और इस प्रकार का जीवन जीने वाले सभी रचनाकार भारत के आम आदमी को उसके भीतरी बाहरी यथार्थ को समझने में हमारी सहायता करते हैं इस से यह भी पता चलता है कि भारत के आम आदमी से निकटता स्थापित करने के लिए हमें 'सोज़' जैसे शायर की रचनाओं की आवश्यकता है। यह भी एक कारण है जिसके चलते हिन्दी में उर्दू के इस संभावना शील शायर का भरपूर स्वागत होना चाहिए।

प्रो0 देवराज
डीन स्कूल ऑफ ट्राँन्सलेशन एण्ड इन्टरप्रिटेशन
महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय
वर्धा-महाराष्ट्र

धन्यवाद

मैं सबसे पहले ईश्वर को धन्यवाद देना चाहूँगा, क्योंकि उन्होंने ही प्रतिकूल परिस्थितियों में मुझे ''चोटें'' को आप तक पहुँचाने का साहस दिया।

गत कई वर्षों से दोस्तों का आग्रह था कि काव्य संग्रह प्रकाशित होना चाहिये तो 2014 में ''अज़राब'' के नाम से उर्दू में प्रकाशित हुआ जिसे बहुत पसंद किया गया लेकिन इस मौके पर उर्दू न जानने वाले दोस्तों ने कहा कि हिन्दी में भी कुछ होना चाहिये तो उनकी बात को मानते हुए मै ''चोटें'' की तैयारी में लग गया।

मेरे कहने पर भूमिका लिखने की ज़िम्मेदारी देवराज जी ने सहर्ष स्वीकार की और यशपाल सिंह पंवार साहब सेवा निवृत पुलिस इन्सपैक्टर ग़ाज़ियाबाद ने प्रकाशनार्थ सहयोग दिया मौहम्मद ज़हीरूद्दीन साहब (निज़ामाबाद, तिलंगाना) ने टाइटिल पेज बनाकर दिया और मेरे लड़कपन के साथी शेख़ लईक अहमद साहब (फारेस्ट कान्ट्रेक्टर, नजीबाबाद, उ.प्र.) ने डी.टी.पी. कराने में मेरी मदद की, डा0 अब्दुर्रहमान दाऊदी साहब लेक्चरार गिरिराज डिग्री कालेज और शकील अहमद साबरी साहब (मालिक उज़मा गार्डन फ़ंक्शन हॉल, निज़ामाबाद) की मुहब्बतें और नेक मश्वरे मेरे साथ रहे, डा0 अब्दुल क़दीर ''मुकद्दर'' साहब ने ''चोटें'' को तमहीद पब्लिकेशन से प्रकाशित किया मैं अपने इन सब दोस्तों हमदर्दों और सहयोगियों का दिल की गहराई से शुक्रगुज़ार हूँ।

सोज़ नजीबाबादी

Blank

मुनाजात[1]

हर सू[2] है तारीकी[3] आम
चलना मुश्किल है दो गाम[4]

है तेरी तो रहमत[5] आम
आता है तू सब के काम

ठोकर खा कर मेरा हाथ
गिर जाने से पहले थाम

बादल जैसे जल बरसाए
सुख बरसाए तेरा नाम

गुल[6] की सूरत[7] ख़न्दाँ[8] है
दिल की शाख़[9] पे तेरा नाम

काश उड़ाकर ले जाए
तेरा लुत्फ़[10] मेरे आ लाम[11]

1-प्रार्थना, 2-हर तरफ, 3 अन्धेरा, 4-दो पग, 5-दया, 6 फूल, 7-तरह
8-मुस्काना, 9-डाल, 10-कृपा, 11-दुःख

Blank

नज़्में[1]

1-लड़याँ, शब्द मालाएं

Blank

आज का सच

आज सालाना क़ौमी तक़ारीब[1] में
गूँजती है फ़ज़ा[2] में तो गाँधी की जय

सोच लोगों की बदली हुई है मगर
राब्ता[3] अब तशद्दुद[4] से है ख़ासकर

नूर[5] बापू के अफ़्कार[6] का खो गया
अब अहिंसा का जज़्बा[7] फ़ना[8] हो गया

नोट पर और दफ़्तर[9] की दीवार पर
सिर्फ़ गाँधी की तस्वीर[10] मौजूद है।

1-वार्षिक राष्ट्रीय उत्सवों में, 2-वातावरण, 3-जुड़ाव, 4-हिंसा
5-प्रकाश, 6-विचारों , 7-भाव, 8-मिटना, मिट गया, 9-कार्यालय
10-चित्र, फोटो

नग़मा[1]

गुन-गुना, गुन-गुना दिल मेरे गुन-गुना
अज़मते हिन्द[2] का कोई नग़मा सुना

मन की मस्ती से गीतों के मुखड़े बना
गीत मीठे सुरों में लबों[3] पर सजा
बात पछवा की कर गीत पुरवा के गा

गुन-गुना, गुन-गुना दिल मेरे गुन-गुना
अज़मते हिन्द का कोई नग़मा सुना

मैल बुग्ज़[4] और नफ़रत का दिल से छुड़ा
फ़र्क़[5] नस्ल और इलाक़ाइयत[6] का मिटा
मन को धो जाए जो, ऐसी गंगा बहा

गुन-गुना, गुन-गुना दिल मेरे गुन-गुना
अज़मते हिन्द का कोई नग़मा सुना

1-गीत, 2-भारत की महानता, 3-होंटो, 4-बैर, शत्रुता, 5-अन्तर
6-क्षेत्रवाद

आज जमना नदी के किनारे पे जा
दर्द राधा से ले बोल कान्हा से ला
मन की मुरली बजा, दिल की बंसी सुना

सब को कसरत[7] में वहदत[8] का मन्तर जपा
मुश इले इल्म[9] हाथों में लेकर दिखा
क़ौम को ज़िन्दा अक़वाम[10] का रास्ता

गुन-गुना, गुन-गुना दिल मेरे गुन-गुना
अज़मते हिन्द का कोई नग़मा सुना

7-अनेकता, 8-एकता, 9-ज्ञान की मशाल, 10-जीवित राष्ट्रों

''सदा-ए-दिल[1]''

गूँजती रहती है अक्सर दिल के अन्दर ये सदा[2]
अड़चने तो और भी हैं ज़िन्दगी की राह में
एक अगर दीवारे बर्लिन[3] गिर गई तो क्या हुआ
और दीवारें बहुत हैं आदमी की राह[4] में

देखकर नफ़रत के फलते फूलते ब्योपार[5] को
मुज़तरिब[6] होता है दिल जब देखकर संसार को

माँगता है आदमी से इन सवालों का जवाब
क्या कभी आएगा मुस्तक़बिल[7] में कोई इन्क़लाब[8]
क्या कभी आएंगे एक मरकज़[9]पे बिछड़े क़ाफ़ले[10]
क्या कभी मिट पाएंगे जो दरमियाँ[11] है फास्ले[12]

गूँजती रहती है अक्सर दिल के अन्दर ये सदा

1-दिल की, मन की आवाज़, 2-आवाज़, 3-बर्लिन की दीवार, 4-मार्ग, 5-व्यापार
6- व्याकुल, 7-भविष्य, 8-परिवर्तन, 9-केन्द्र, 10 समूह, 11-मध्य, 12- दूरियाँ

पैग़ाम[1]

हयात[2] अब आदमी की और भी बोझल न हो जाए
ज़मीं[3] पर फैलते जाते हैं जुल्मों जब्र[4] के साए
ज़माने[5] की तबाही[6] के क़वी[7] आसार[8] बन आए
तक़ाज़े[9] वक़्त के दिल ने मुझे ये कह के समझाए

उजाले से अंधेरे को मिटाने का ज़माना है
ये सोई आदमिय्यत[10] को जगाने का ज़माना है

ये औरत की मुहब्बत का फ़साना[11] मत सुनाओ अब
रबाबे नुत्क[12] पर बेदारियों[13] की धुन बजाओ अब
चटानों की तरह जमकर खड़ा होना सिखाओ अब
उठो तबदीलयों[14] का कोई नग़्मा[15] गुन-गुनाओं अब

1-संदेश, 2 जिन्दगी, 3-धरती, 4-अत्याचार और ज़ोर जबरदस्ती, 5-दुनया
6-विनाश, 7-सुदृढ़, 8-लक्षण, 9-माँगे, 10-मानवता, 11-काल्पनिक कथा
12-वाक्शक्ति की सारंगी, 13-जागृतियों, 14-परिवर्तनों, 15-गीत,गान

कहानी

लो सुनो ये शेर बकरी की कहानी ऐसे है
वक़्त की कश्ती ये दोनों सफर करते हैं तय
वक्त की कश्ती चली आती है जब थोड़ी सी दूर
शेर की निय्यत में आ जाता है कुछ फ़र्को-फ़ुतूर[1]

इस लिए बकरी पे ये तोहमत[2] लगा देता है वो
उसपे हमले का बहाना ये बना लेता है वो
बाग़्याना तर्ज़[3] के ये गीत गाती है बहुत
मेरी सूरत देखकर ये गुल[4] मचाती है बहुत
भूक अब अपनी इसे खाकर मिटाना चाहिए
जुर्म[5] का इस के मज़ा इस को चखाना चाहिए

इन बुरे हालात में कहती है बकरी काँप कर
रहम कर अय शेर राजा रहम[6] कर कमज़ोर पर
शेर ले लेता है जाँ[7] बकरी की दौराने सफ़र[8]
होके रह जाती हैं सारी इल्तेजाएं[9] बे असर

अहदे तिफ़्ली[10] में सुना कर ये कहानी रात को
माँ कहा करती थी ''बेटा याद रख इस बात को
शान[11] से जीने का हक़ दुनया में है शहज़ोर[12] को
ज़िन्दगी ज़िल्लत[13] की मिलती है यहाँ कमज़ोर को''

1-अनतर और बिगाड़, 2-आक्षेप, 3-विद्रोही शैली, 4-शोर, 5- अपराध 6-दया, 7-प्राण, 8-यात्रा के बीच, 9-प्रार्थनाएं, 10-बचपन में 11-प्रभाव पूर्ण ढंग, 12-शक्ति शाली, 13-हीनता

उल्लू की शादी

आते जाते मग़रिबी[1] उल्लू के एक फ़र्ज़न्द[2] को
मशरिक़ी[3] उल्लू की बेटी से मुहब्बत हो गई
देखते ही ''होश से बेगाना[4]'' होकर रह गया
और दीवानों[5] की जैसी उसकी हालत[6] हो गई

मग़रिबी उल्लू ने जब फ़र्ज़न्द का देखा ये हाल
उसको इस हालत पे बेटे की हुआ बेहद मलाल[7]
अपने बेटे की तमन्ना[8] पूरी करने के लिए
उसने डाला ख़ाना आबादी[9] एक दिन ऐसा जाल

मो-तबर[10] से चार उल्लू आके सूखे पेड़ पर
रात की तारीकयों[11] में अहले दुख़्तर[12] से मिले
अपने आने का सबब[13] पहले बता देने के बाद
देर तक जारी[14] रहे यूँ गुफ़्तगू[15] के सिलसिले[16]

अहले दुख़्तर ने कहा लड़की मिसाले-हूर[17] है

बूमज़ादी[18] है नहूसत[19] के लिए मशहूर[20] है मेहर[21] की बाबत[22] अगर सौ गाँव दो उज़ड़े हुए अक़्द[23] हो जाएगा, बोलो-शर्त ये मन्ज़ूर[24] है

नौशा[25] वालों ने कहा ये शर्त छोटी है बहुत अहले मग़रिब के लिए सौ गाँव की क्या अहमियत[26]

जब कहीं पर बम हमारे हुक्मराँ[27] बरसांएगे और खूँरेज़ी[28] बराए शौक़[29] जब फ़रमाएंगे आपकी जो माँग है उससे सिवा[30] दे देंगे हम आप की बेटी को वीराना[31] बड़ा दे देंगे हम

1-पश्चिमि, 2-पुत्र, 3-पूरबी, 4-सोचने समझने की शक्ति खो देना 5-पागलों, 6-दशा, 7-पश्चाताप, 8- इच्छा, 9-घर बसाना, शादी विवाह 10-विश्वसनीय, 11-अन्धेरों, 12-बेटी वाले, 13-कारण, 14-चालू रहे चलते रहे, 15- बात चीत, 16-चेन कड़ियाँ, 17-स्वर्ग की अपसरा जैसी 18-उल्लुओं की वंशज, 19-अशुभता, 20-प्रसिद्ध, 21-वह धन राशि या सम्पत्ति जो मुसलमानों में विवाह संस्कार के समय वर की ओर से वधु को देने का अनुबन्ध किया जाता है, 22-सम्बन्ध में, 23-निकाह, विवाह, 24-स्वीकार्य 25-वर, 26-इम्पोर्टेन्स, 27-राज तन्त्र के चालक, 28-रक्त पात, 29-शौकिया शौक पूरा करने के लिए, 30-अधिक, 31-उजाड़ क्षेत्र

एक याद

भूले से आईने[1] में जो देखी कल अपनी शक्ल[2]
पाया ख़िज़ाँ[3] के साये में उम्रे र-वाँ[4] का नख़्ल[5]
मानिन्दे यख़[6] सफ़ेद थी बालों की पक्की फ़स्ल[7]
तबदीलियों[8] को देख के चकराई मेरी अक़्ल[9]

मालूम ये हुआ मुझे परदा उठा जो कल
और एक कदम[10] ख़याल ने पीछे रखा जो कल

कि धूप ज़िन्दगी की बहुत जल्द[11] ढल गई
फ़स्ले शबाब[12] मौसमे पीरी[13] में जल गई
दिल पर लगी ये चोट कि दुनया बदल गई
हाथों से मेरे हाय जवानी निकल गई

चश्मे तसव्वुरात[14] हुई फिर रसा[15] जो कल
और एक कदम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

मैं ख़्वाब-हाए दौरे जवानी[16] में खो गया
यादों की गहरी झील के पानी में खो गया

जज़्बात[17] की नदी की र-वानी[18] में खो गया
गुज़रे हुए दिनों की कहानी में खो गया

माज़ी[19] की सम्त[20] और मैं थोड़ा चला जो कल
और एक क़दम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

क़िस्सा[21] सफ़र[22] का रेल के याद आ गया मुझे
मेरे तसव्वुरात[23] में दोहरा गया मुझे
छोड़े हुए मक़ाम[24] पे पहुँचा गया मुझे
तस्वीर[25] गुज़रे[26] दौर[27] की दिखला गया मुझे

देखा ये मैंने और मैं पीछे चला जो कल
और एक क़दम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

गोदी में लेके बच्चे को बहला रही है वो
उसकी कमर को हाथ से सहला रही है वो

दीवानावार[28] मुझको तके जा रही है वो
मैं उस को देखता हूँ तो शर्मा रही है वो

यादों का साज़[29] ज़हन[30] ने छेड़ा ज़रा जो कल
और एक कदम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

कहता हूँ उस से मैं कि मुझे जानती हो तुम
वाक़िफ़[31] हो मुझसे क्या मुझे पहचानती हो तुम
जो मेरे साथ पढ़ती थी वह शान्ति हो तुम
राधा हो मेरे गाँव की या कान्ति हो तुम

फिर मैं उतर के रेल से आने लगा जो कल
और एक क़दम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

हँस कर दबी ज़ुबान से बोली वो ख़ुश ख़िसाल[32]
अच्छे हो तुम तुम्हारी जवानी है बे मिसाल[33]
देखा तुम्हें तो दिल में ये पैदा हुआ ख़याल[34]
तुमसा जवान होगा बड़ा होके मेरा लाल

कहने लगी ये बात मैं उठकर चला जो कल
और एक कदम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

बस इसलिए ही तुम को तके जा रही थी मैं
ख़्वाबों[35] से अपने आप को बहला रही थी मैं
माँ बन के अच्छे बेटे की इतरा रही थी मैं
बेटा जवान देख के शर्मा रही थी मैं

कहने को और कुछ भी न बाक़ी रहा जो कल
और एक कदम ख़याल ने पीछे रखा जो कल

1-दर्पण में, 2-आकृति, 3- पतझड़, 4-वर्तमान आयु, 5-वृक्ष पेड़ 6-बरफ की तरह, 7-फसल, क्रोप, 8-परिवर्तनों, 9-बुद्धि, 10-पग 11-शीघ्र, 12-यौवन, 13-वृद्धा वस्था, 15-पहुँचने में सक्षम, 16-यौवन काल के सपनों, 17-भावनाओं 18-बहाव, 19-भूतकाल, 20-ओर, 21-कहानी 22-यात्रा, 23-कल्पनाओं, 24-स्थान, 25-चित्र (भावार्थ, दृष्य), 26-बीते 27-काल, 28-पागलों की तरह, 29-वाद्य, बाजा, 30-स्मृति, मैमोरी 31 परिचित, 32-अच्छे स्वभाव वाली, 33-अनुपमेय, 34-विचार, 35-सपनों

'सोच'

(वैलेन्टाइन-डे पर)

खुलेपन के माहौल का क़द्रदाँ[1] था
इन आज़ादियों का ही मैं मदहा-ख़्वाँ[2] था
तक़ाज़ों[3] को इस दौर[4] के जानता था
तुम्हारी तरह ही मैं ये मानता था

मैं सोचा किया[5] धूप में ज़िन्दगी की
ज़रूरी है ज़ुल्फ़ों[6] के साए[7] में जीना
ज़रूरी है इस ज़िन्दगी की थकन में
शराबे नज़र[8] का भी एक जाम पीना

मगर क्या करूँ ज़हन[9] बे-बाकियों[10] के
नतीजे[11] की बाबत[12] बहुत सोचता है
नई राह[13] के सिल-सिले[14] में मेरा दिल
अब आँखे ये कहकर मेरी खोलता है।

तमद्दुन[15] की तहज़ीब[16] की रौशनी में
तरक़्क़ी[17] के इस दौर[18] में इस सदी[19] में
मयस्सर[20] किसी को नहीं सीधा रस्ता
वो भटकाव है आज की ज़िन्दगी में

किसी राह पर पाओं धरने से पहले
हमें अपनी मन्ज़िल को पहचानना है

1-क़दर करने वाला, 2-प्रशंसक, 3-माँगों, 4-काल, 5-सोचता था
6-बालों की लटें, 7-छाया, 8-नज़र की शराब, आँखों की मदिरा
9-मन, 10-निरंकुशता, 11-परिणाम, 12-सम्बन्ध में, 13-आधुनिक
जीवन शैली, 14-विषय में, 15-सभ्यता, 16-संस्कृति, 17-विकास
18-काल, 19-शताब्दि, 20-उपलब्ध, सरलता पूर्वक प्राप्त

कतबा[1]

मैं वो माहीगीर[2] था जो जाल फैलाता हुआ
ग़म के पानी के थपेड़े रूह[3] पर खाता हुआ
गीत ऊँचे हौसले से पुर[4] सदा[5] गाता हुआ
बहरे हस्ती[6] पर फिरा दिन रात मंडलाता हुआ

और पानी से समुन्दर के मैं ये कहता रहा
नाम जिस मछली का लोगों ने सुकूने दिल[7] रखा
है तुझे उसकी ख़बर कुछ है तुझे उसका पता
आह पानी ने मगर सुन कर न दी में मेरी सदा[8]

जब चली हर सम्त[9] से बेदर्द[10] तूफ़ानी हवा
इस ग़ज़ब नाकी[11] के आलम[12] में समन्दर चीख़ उठा
जाल जब पानी से टकराकर मेरा फटने लगा
ओढ़ कर मै ख़ाक[13] की चादर ज़मी[14] पर सो गया

ये किसी की क़ब्र[15] के पत्थर पे था लिक्खा हुआ
पढ़के इस तहरीर[16] को मैं सोचता ही रह गया
कि सकूने-दिल कभी दुनया के अन्दर था भी, या
आदमी नापैद[17] शय[18] को ढूँडता फिरता रहा

1-कब्र के सर की तरफ लगी हुई शिला जिस पर कुछ लिखा होता है 2-मछेरा, 3-आत्मा, 4-भरे हुए परिपूर्ण, 5-सदैव, 6-जीवन के समुद्र 7-मानसिक शान्ति, 8-पुकार, 9-ओर दिशा, 10-निर्मम, 11-भयावह 12-स्थिति, 13-माटी, 14-धरती, 15-वह गढ़ा जिसमें मुसलमान मृत शरीर को दबाते है, 16-लेख, 17-जो पैदा नही हुई, 18-वस्तु

बेघरी[1]

शहर में बन्दों के है घर अनगिनत हर मोड़ पर
एक है अल्लाह लेकिन कितने हैं उसके भी घर
हम ग़रीबों का मगर दुनया में कोई घर न दर
इन ख़्यालों में वो लड़की खोई-खोई हो गई
सर पे छत की आरज़ू[2] सीने में काँटे बो गयी।

हो गए जब रफ़्ता-रफ़्ता[3] सारे गुब्बारे तमाम[4]
आ गये जब जेब में बाक़ी बची गुड़यों के दाम[5]
पी चुकी जब शाम भी तारीकयों[6] के चन्द जाम[7]
रात जब गहराये सन्नाटे के अन्दर खो गई
'आएशा' फ़ुट पाथ पर चादर बिछा कर सो गई

1-गृह विहीनता, 2-अभिलाषा, 3-शनःशनः, धीरे-धीरे, 4-समाप्त
5-पैसे, 6-अन्धेरो, 7-पियाले

अम्मी[1]

तुम्हारी याद इस दिल में बसी है आज भी अम्मी
अक़ीदत[2] की अगन[3] दिल में वही है आज भी अम्मी
तसव्वुर[4] में तुम्हारी क़ब्र[5] पर ही नोहा ख़ुवाँ[6] हूँ मैं

हवा सी किस लिए तुम सांए सांए करती फिरती हो
वहाँ किसके लिए तुम ओस बनकर गुल[7] पे गिरती हो
शिवालिक के पहाड़ों की तराई में कहाँ हूँ मैं

न डोलो बन के बदली खाली-खाली सी फ़ज़ाओं[8] में
कि मैं रहता नहीं हूँ कुछ दिनों से अपने गाँव में
बताऊँ क्या तुम्हें अम्मी यहाँ हूँ या वहाँ हूँ मैं

हवा की शक्ल[9] में आओ कभी दरया[10] किनारे पर
पढ़ो रूक कर मुझे गोदावरी[11] के जल के धारे पर
कफ़े अमवाज[12] पर लिखखी हुई एक दास्ताँ[13] हूँ मैं

तलाशे रिज़्क़[14] में अब एक भटकता कार-वाँ हूँ मैं
लहद[15] में चैन से सो जाओ मत सोचो कहाँ हूँ मैं

1-माँ, 2-मन का विश्वास, 3-आग ज्वाला, 4-कल्पना, 5-समाधि 6-विलाप करना, 7-फूल, 8-वातावरण, 9-रूप, वेश, 10-जलाशय नदी 11-दक्षिण भारत की सरिता का नाम, 12-जल तरंगों की हथेली 13-बड़े आकार की कहानी, 14-खाद्यान की खोज, 15-समाधि का आन्तरिक भाग, क़बर के अन्दर का गढ़ा

सई-ए-रायगाँ[1]

हरा भरा है वो कालिज का लान नज़रों में
सुहाने दौर का मन्ज़र[2] नज़र में ताज़ा है
मैं उस को अपनी निगाहों से गुद-गुदाता हूँ
और उसके चहरे पे रंगे ख़ुशी का ग़ाज़ा[3] है

किसी के साथ तो जीने की बात अब तक भी
र-बाबे ज़हन[4] के तारों को झनझनाती है
ज़बाने दिल[5] से किसी से किया हुआ वादा
लकीर की तरह पत्थर की अब भी बाकी[6] है

मगर जो उम्र तअल्लुम[7] की नज़्र[8] की मैंने
वो अपनी उम्र[9] सरासर[10] ख़राब की मैंने
सिला[11] तवील[12] रियाज़त[13] का ये मिला गोया[14]
तलाशे आब[15] में सैरे सुराब[16] की मैंने

अगर उगा मेरे घर में तो वो उगा पौदा
कि जिसकी शाख़[17] पे एक फूल खिल नहीं सकता
अगर मिली भी तो कालेज से वो मिली डिग्री
कि जिसके बदले कफ़न तक भी मिल नहीं सकता

ज़रूरतों के अज़ाबों[18] में मुब्तला[19] रह कर
किसी के ज़हन[20] की उलझन को किस तरह समझूँ
उलझ के अपने ही हालात के भँवर में मैं
किसी के क़ल्ब[21] की धड़कन को किस तरह समझूँ

1-निरर्थक प्रयास, 2-दृष्य, 3-प्रसन्नता रूपी रंगो का पाउडर, 4-मन की वीणा
5-मन की जुबान, दिल की जुबान, 6-शेष, 7-पढ़ाई लिखाई, 8-भेंट, 9-आयु
10-इधर से उधर तक पूरी, 11-बदला, फल, 12-लम्बी, 13-परिश्रम, 14-जैसे कि
15-पानी की खोज, 16-मरिचिका भ्रमण, 17-डाल, 18- दुखों, 19-फँसा हुआ
20-मन, 21-दिल, हृदय

मेरे हमदम[1]

फिर ज़ुबाँ पर दर्दे-दिल[2] की है कहानी किस लिए
तूने अपनाली र-विश[3] फिर ये पुरानी किस लिए

जो भी होना है, वो सब होकर रहेगा याद रख
दिल की दुनया को सुकून-ओ-सब्र[4] से आबाद[5] रख
मुस्कुराकर ज़िन्दगी का गीत गाने के लिए
कल के दिन को आज से बेहतर बनाने के लिए
टूटकर बिखरे हुए ख़्वाबों से मुँह को फेर कर
फिर हयात-अफ़्ज़ा[6] नया सा कोई गाना छेड़ दे
हौसला मन्दी से पुर[7] कोई तराना[8] छेड़ दे
ज़िन्दगी के हाथ में जिन्दा-दिली[9] का साज़ दे
ग़म में खोई ज़िन्दगी को दिल नशीं[10] आवाज़ दे

1-मेरे मित्र, 2-मानसिक पीड़ा, 3-पथ, 4-शान्ति और सन्तोष, 5-बसा हुआ
6-जीवन दायक, 7-भरा हुआ, 8-गीत, 9-खुश रहना, 10-मन को छूने वाली

फिर आँऊगा

आस का सूरज छुपा, सूरज मुखी मुर्झा गया
उस हसीं[1] मन्ज़र[2] पे अब गहरा अन्धेरा छा गया
मेरे अरमानों की बस्ती रह गई पीछे बहुत
ज़िनदगी ये तो बतादे मैं कहाँ तक आ गया

और कितना है सफ़र बाक़ी[3] मुझे समझा ज़रा
और कितने ख़ार[4] चुभने है मुझे गिनवा ज़रा
और कितने मोड़ मुझको राह के दिखलाएगी
और ग़म की धूप में कितना मुझे झुलसाएगी

जानता हूँ राह[5] में हूँ, मन्ज़िलों से दूर हूँ
छोड़ दे लेकिन मुझे, मैं ज़ख़्मे ग़म[6] से चूर हूँ
ग़म की गठरी फेंक कर मैं चैन से हो जाऊँगा
राह के सूने किनारे पर कहीं सो जाऊँगा

1-सुन्दर, 2-दृश्य, 3-यात्रा शेष, 4-काँटे, 5-मार्ग, 6-दुख का घाव

सुब्हे नौ[7] की आहटों से जब कभी जागूँगा मैं
शहरे हस्ती[8] में मुग़न्नी[9] बन के फिर आँऊगा मैं

अज़-मते इन्साँ[10] के लेकर मैं तराने[11] आऊँगा
आदमी की जीत के मैं गीत खुलकर गाऊँगा

आदमी इनसान बन जाएगा जब इस शहर में
चैन से जीने का जब माहौल होगा दहर[12] में

7-नई भोर, 8-संसार, 9-गायक, 10-मनुष्य की महानता, 11-गीत, 12-दुनया

कम नहीं

खुशी भी है यहाँ अब सिर्फ़[1] ग़म ही ग़म नहीं यारो
ये दुनया भी किसी जन्नत[2] से हर्गिज़[3] कम नही यारो
सजाओ इसको खुश अन्जाम[4] पाकीज़ा[5] ख्यालों से
इसे आरास्ता[6] करलो सदाक़त[7] के उजालों से

मुहब्बत के चलन को आम करके तो ज़रा देखो
चलेगी फिर सुकूने क़ल्ब[8] की ठन्डी हवा देखो
लिखी किस्मत में अपनी सिर्फ़ चश्मे नम[9] नहीं यारो
ये दुनया भी किसी जन्नत से हर्गिज़ कम नही यारो

इसे वाक़िफ़[10] कराओ इल्म[11] के रौशन सवेरों[12] से
इसे बाहर निकालो तो जहालत[13] के अन्धेरों से
इसे महरूमियों[14] के क़हर[15] से महफ़ूज़[16] तो करलो
कि इस ख़ाके[17] में कुछ आसूदगी[18] का रंग तो भरलो

कहोगे तुम ही फिर अब हम को कोई ग़म नही यारो
ये दुनया भी किसी जन्नत से हर्गिज़ कम नही यारो

1-केवल, 2-स्वर्ग, 3-कभी नहीं, 4-सुपरिणामी, 5-पवित्र, 6-सजाना सुसज्जित, 7-सच्चाई, 8-मानसिक शान्ति, 9-आँसू भरी आंख, 10-अवगत परिचित, 11-शिक्षा, ज्ञान, 12-जगमगाती भोरों, 13-अज्ञान, 14-वंचित होने की स्थितियों, 15-प्रकोप, 16-सुरक्षित, 17-ढाँचा, 18-सम्पन्नता

एक ही रास्ता

कल का गुज़रा[1] हुआ दिन हम से बहुत दूर गया
छुप गया जाके वो माज़ी[2] के अन्धेरे में कहीं
छिन गया ऐसे के जैसे वो हमारा ही न था
और अब उस से हमारा कोई रिश्ता[3] ही नहीं

रात के बाद कल एक और जो दिन आएगा
किस से क्या छीनेगा, क्या किस को वो दे जाएगा
किस को सैराब[4] करेगा, किसे तरसाएगा[5]
किसको मालूम है किस के लिए क्या लाएगा

गुज़री कल और इस आती हुई कल का क़िस्सा
भूलकर आज चलो, आज को अपनाएं हम
ये ही अपना है यही मान के आपना के इसे
आज के दिन को तो जी जान से जी जाएं हम

1-बीता हुआ, 2-भूतकाल, 3-नाता, सम्बन्ध, 4-तृप्त, 5-इच्छा से कम देगा

इनकेशाफ़[1]

आलमे होश[2] में आने पे मेरे पहले पहल
जो मेरे साथ थी एक जिन्स[3] गिरा माया सी[4]
जो मेरे साथ थी शफकत[5] का घना सायासी
रूप में माँ के ज़माने की इसी राह पे कल

फिर जवानी में मुझे रूप में बीवी के मिली
मेरे सुख दुख की मेरी जीस्त[6] की साथी बनकर
और माँ बन गई फिर जो मेरे बच्चे जनकर
मेरे नज़दीक[7] वो औरत फ़क़त[8] औरत ही न थी

एक मोअम्मा[9] थी मेरे वास्ते औरत की ज़ात
मैंने दिन रात तलाशे जो सवालों के जवाब
आखिरश[10] हट ही गया रूए हक़ीक़त[11] से नक़ाब[12]
खुल के आ ही गई एक दिन मेरे आगे ये बात

लोग औरत जिसे कहते है वो कुन[13] का है साज़
मुनकशिफ़[14] हो ही गया मुझ पे, छुपा था जो राज़[15]

1-किसी बात का खुलना, 2-इस लोक, 3-वस्तु, 4-बहुमूल्यसी, 5-स्नेह 6-जीवन, 7-मेरे अनुसार, 8-केवल, 9-उलझा हुआ प्रश्न, पहली 10-अन्ततः 11-यथार्थ के मुख, 12-परदा, 13-होजा (किसी चीज़ के पैदा करने के लिए ईश्वरीय आदेश का स्वर), 14-विदित, 15-रहस्य

एक ख़याल

ख़यालों में मेरे जब माँ की परछाई उभरती है
तो उसकी याद रहमत[1] की तरह दिल में उतरती है
तसव्वुर[2] की गली से वो परी[3] जिस दम[4] गुज़रती[5] है
तो बरछी से नज़र की मेरे दिल पर वार[6] करती है

तक़ाज़ा[7] अक़्ल[8] का ये है कि अब माज़ी[9] की यादों को
ज़मीं में कब्रे निसयाँ[10] की दबा दफ़्ना[11] के जी लूँ मैं
मिटाकर हाफ़्ज़े[12] से याद को गुज़रे[13] ज़माने[14] की
ये बाक़ी[15] उम्र[16] अहदे हाल[17] को अपना के जी लूं मैं

1-कृपा, 2-कल्पना, 3-असीम सुन्दरी, 4-क्षण, 5-जाती है, 6-आक्रमण करना चोट लगाना, 7-माँग, 8-बुद्धि, 9-अतीत, 10-विस्मृति की क़बर की धरती में 11-गाड़कर, 12-स्मृति, 13-बीते, 14-समय, काल, 15-शेष, 16-आयु, 17-वर्तमान

Blank

ग़ज़लें

Blank

ताबा मन्ज़र[1] है अजब[2] धुन्द उजाला कम है
आज मंन्जिल का निशां[3] सूझने वाला कम है

ये जो तलवे पे सजाया है रहे मन्जिल[4] ने
क्या किसी गौहरे-ग़ल्ताँ[5] से ये छाला कम है

वज्हे नाकामिए तदबीर[6] को सोचा है बहुत
बात को शोमिए तक़्दीर[7] पे टाला कम है

जुल्म[8] के दौर[9] में ज़ालिम की तरफदारी[10] में
क्या जुबानों पे पड़ा आज ये ताला कम है

हम बुरे लोग बस इतने ही बुरे हैं हमने
ज़हन[11] में नेक ख़यालात[12] को पाला कम है

रिज़्को रोज़ी[13] के तजस्सुस[14] में लगे लोगों ने
खुद से मिलने के लिए वक़्त[15] निकाला कम है।

1-दृश्य तक, 2-अनूठी, 3-स्थान, पता, मन्जिल के रास्ते, 5-बहुमूल्य रत्न
6-प्रयास की विफलता के कारणों को, 7-दुर्भाग्य, 8-अत्याचार, 9-काल
10-अत्याचारी के पक्ष में, 11-सोच, 12-सुविचारों, 13-भोजन और काम काज
14-खोज, 15-समय

किसी दिन इस तरह इनसाफ का इमकान[1] जागेगा
फ़ना[2] होगी ये दुनया हश्र[3] का मैदान जागेगा

फरोगे़ आदमिय्यत का[4] क़वी[5] इमकान जागेगा
दिले इनसाँ[6] में तब्दीली[7] का अब अरमान[8] जागेगा

यही सुनते रहे के अब चलेगी बादे-बेदारी[9]
ज़मी[10] पर अब सवेरा होगा अब इनसान जागेगा

ये तिनके और ज़र्रे ख़ाक के[11] सब सर उठाएंगे
सदाए बादे सर सर[12] सुनते ही मैदान जागेगा

भलाई की र-विश[13] अपनाने वाले होश में आजा
कदम इस राह पर रखते ही हर शैतान जागेगा

उगें पुर खार[14] झाड़ी बन के हम बन्जर ज़मीनों में
सितम की रूत के पौदों में यही अरमान जागेगा

1-सम्भावना, 2-नष्ट, 3-कर्मो का फल मिलने की जगह, 4-मानवीय गुणो के विकास का, 5-दृढ़, 6-मनुष्य के मन में, 7-परिवर्तन, 8-इच्छा, 9-जागृति की पवन, 10-धरती, 11-धूल के कण, 12-तेज़ हवा की आवाज़, 13-मार्ग, 14-काँटो भरी

हादेसा[1] बन-बन के आफ़ाते जहाँ[2] का टूटना
हमने झेला है सरों पर आसमाँ का टूटना

टूटना इतने दिलों का नफ़रतों[3] के दौर[4] में
है मेरे नज़दीक[5] ये हिन्दोस्ताँ का टूटना

आमदे फ़स्ले बहाराँ[6] तक न मिट ए[7] ज़िन्दगी
देख लेने दे मुझे ज़ोरे-ख़िज़ाँ[8] का टूटना[9]

मौत क्या है, जिन्दगी में आदमी के जिस्म से
रूह[10] का आज़ाद होना क़ुफ़्ले जाँ[11] का टूटना

ताके एक कैदी को मिल जाए रिहाई[12] क़ैद से
है इसी बाइस[13] ये रब्ते जिस्मों जाँ[14] का टूटना

1-घटना, 2-दुनया की मुसीबतें, 3-घृणा, 4-समय, काल, 5-मेरे अनुसार
6-वसन्त ऋतु के आगमन तक, 7-हे, 8-पतझड़ के ज़ोर, 9-क्षीण होना
10-आत्मा, 11-जान का ताला, 12-मुक्ति, 13-कारण, 14-शरीर और आत्मा का सम्पर्क

हमको ग़मे हयात[1] के काँटों पे डाल के
लिखवाए हम से वक़्त[2] ने नग़्मे[3] कमाल के

रख दी गई दिलों से सदाक़त[4] निकाल के
शायद बहुत क़रीब[5] हैं मौसम ज़वाल[6] के

सच्चा जवाब एक ही होता है मेरे दोस्त
कितने जवाब देगा मेरे एक सवाल के

आदत हमेशा घूमते रहने की है इसे
रखना क़दम ज़मीं पे ज़रा देखभाल के

हम दस के हिन्दसे[7] में हैं उस एक की तरह
ज़ीरो ही बाक़ी[8] बचता है, जिस को निकाल के

1-जीवन के दुख, 2-समय, 3-गीत, 4-सच्चाई, 5-निकट, 6- पतन
7-अंक में, 8-शेष

गुज़रता पल गढ़े में मौत के गिरता रहा बरसों
यहाँ तो मौत को ही ज़िन्दगी कहना पड़ा बरसों

किसी बे सहन[1] कमरे के उसूलों[2] को मैं क्या जाँनू
खुले मैदान की खाई है मैंने तो हवा बरसों

तमाशा देखने मेरा न आए आप ही मैं तो
बगूले[3] की तरह मैदान में रक्साँ[4] रहा बरसों

बुलन्द[5] आवाज़ में झूटी कहानी कह के वो समझा
रहेगी गूँजती दुनया के गुन्बद[6] में सदा[7] बरसों

वो बूढ़ा पेड़ आख़िर गिर गया आँधी में कल, जिसने
हमें साया दिया खुद धूप में तपता रहा बरसों

1-आँगन रहित, 2-नियमों, 3-चकराकर ऊपर उठती हुई हवा की तरह, 4-नाचना, नृत्य मग्न, 5-ऊँची, छत, 6-छत का खोखला गोल बुर्ज, 7-आवाज़

मौत का मन्शा[1] यही है हँस के जीना छोड़ दूँ
कसरते आलाम[2] से घबरा के दुनया छोड़ दूँ

मन्ज़िले हस्ती[3] की इन पेचीदा राहों[4] पर बता
किस तरह ए ज़िन्दगी मैं तुझ को तन्हा छोड़ दूँ

अब यहाँ तो दोस्त दुश्मन का पता चलता नहीं
किसका हम राही[5] बनूँ मैं साथ किसका छोड़ दूँ

तोड़ कर रख देगी इस को तलख़ियों[6] की कश-मकश[7]
राब्ते[8] की डोर को थोड़ा सा ढीला छोड़ दूँ

सोचता हूँ जाते जाते याद आने के लिए
मैं भी मेंहदी की तरह कुछ रंग अपना छोड़ दूँ

1-प्लान, इरादा, 2-दुखों की अधिकता, 3-जीवन के गन्तव्य, 4-मार्गों
5-सहगामी, 6-कड़वाहटों, 7-खींचा तानी, 8-सम्पर्क, सम्बन्ध

सर पर इस बदली की छाओं आज सजा भी ली तो क्या
ये मिल कर छिन जाने वाली दुनया पा भी ली तो क्या

रस्ते की पहचान की आख़िर कुछ तो कीमत देनी थी
ऊँची नीची राहों मे एक ठोकर खा भी ली तो क्या

जुल्मत[1] के माहौल[2] में जल कर शब[3] भर नन्हे दीपक ने
सूरज की तक़लीद[4] में खुद को आग लगा भी ली तो क्या

दुनया के हँगामों[5] से घबराई तबीअत[6] हम ने अब
यारों की महफ़िल में आकर कुछ बहला भी ली तो क्या

एक दिन आहें आँसू लेकर यौमे-ग़म[7] तो आना है
सोज़ मोहर्रम[8] से पहले गर ईद मना भी ली तो क्या

1-अन्धेरे, 2-माहौल वातावरण, 3-रात, 4-अनुकरण, 5-गड़बड़, भीड़
6-मन, बुद्धि, 7-दुख का दिन, 8-दुख का त्योहार

अगर हलात[1] को देखो तो सूरत[2] ये है दुनया की
ये शहज़ोरों[3] की जन्नत[4] भी है कमज़ोरों की दोज़ख[5] भी

अन्धेरे ज़िन्दगी की राह पर हावी[6] हुए जब भी
मेरी आँखो में मन्ज़िल[7] की तलब[8] ने रौशनी भर दी

हक़ीक़त ये है कि तब्दीलियों[9] के नाम पर अब तक
सदी[10] बदली है लेकिन किस्मते इनसाँ[11] नहीं बदली

हमेशा ज़हर[12] को अमरत समझ कर बज़्में दुनया[13] में
पियाली ज़िन्दगी के ज़हर की हमने तो हँस कर पी

मिलेगी आ-लमे उक़बा[14] में जन्नत क्यों हमें अय दिल
न मिलपाई हमें जब आके इस दुनया में दुनया ही

1-वर्तमान स्थिति, 2-दशा, 3-बलवानों, 4-स्वर्ग, 5-नर्क, 6-छाए
7-गन्तव्य, 8-किसी चीज़ को पाने की इच्छा, 9-परिवर्तनों, 10-शताब्दि
11-मनुष्य का भाग्य, 12-विष, 13-संसार की महफ़िल, 14-परलोक

अब तो ये आलम[1] है घबराकर ग़मों आलाम[2] से
भागता है दूर इन्साँ ज़िन्दगी के नाम से

माँगने वालों की सफ़[3] में आ गई औलादे शह[4]
और तुम क्या चाहते हो गर्दिशे-अय्याम[5] से

उम्र भर कर के अदा[6] हर क़र्ज़[7] तेरा जिन्दगी
झाड़ कर दामन को अब बैठा हूँ मैं आराम से

सूरतो-सीरत[8] के अन्दर इतनी तबदीली[9] के बाद
कौन अब देगा सदा हमको हमारे नाम से

इस ज़मीनो आसमाँ के दर्मियाँ[10] आने के बाद
क्यों रहे महरूम[11] कोई दर्द के इनआम[12] से

दर्द की लज़्ज़त[13] तो उस दम गीत में पैदा हुई
आरज़ू[14] रोई लिपटकर जब दिले नाकाम[15] से

1-स्थिति, 2-दुख और कष्टो से, 3-पंक्ति, 4-बादशाह के वंशज, 5-दुर्भाग्य समय का फेर, 6-चुकता, 7-ऋण, 8-वेश और चरित्र, 9-परिवर्तन, 10 मध्य 11-वंचित, 12 पुरस्कार, 13-स्वाद, 14 किसी वस्तु को पाने की इच्छा 15-विफल हो जाने वाले के दिल से

समझये अब तो इन आँखों में अश्क[1] आने से
ग़रज़[2] खुशी को पड़ी क्या ग़रीब खाने[3] से

खुदा सकून की दौलत लुटा रहा था और
सुकून माँगते फिरते थे हम ज़मानें से

ये बात दिन के मुकद्दर में रात लिखखी है
समझ में आती है सूरज के डूब जाने से

गए दिनों को जवानी के शोख[4] लम्हों[5] को
गुज़श्ता[6] उम्र[7] लगाकर गई ठिकाने से

दिल इन्तेज़ार में साहिल के मुज़्तरिब[8] था बहुत
सुकून मिल गया कश्ती के डूब जाने से

मेरी वफ़ा[9] का जफ़ा[10] से जवाब दे के 'सोज़'
हँसा तो देती है दुनया किसी बहाने से

1-आँसू, 2-ज़रूरत, आवश्यकता, 3-ग़रीब के निवास स्थान से, 4-सुन्दर 5-पलों, क्षणों, 6-बीती हुई, 7-आयु, 8-व्याकुल, 9-साथ देना, 10-अत्याचार अन्याय

मुक़ीम[1] जैसे कि खुश्बू किसी गुलाब में है
बसा हुआ वह हमेशा ख़्यालो-ख़्वाब[2] में है

जिसे ज़ुबाने बशर[3] कह सकी है लफ़्ज़ों[4] में
अभी लिखी हुई वह बात ही किताब में है

हम इस जहाँ को जहन्नम[5] नहीं तो क्या समझें
हर एक शख्स[6] यहाँ मुब्तला[7] अज़ाब[8] में है

नहीं जवाब मुकम्मल[9] किसी के पास इस का
यहाँ पे आदमी क्यों मुब्तला अज़ाब में है

नज़र मिलाके ग़में ज़िन्दगी[10] को भूल सकूँ
सुरूर[11] इतना तो उस आँख की शराब में है

1-ठहरने वाला, स्थापित, 2-सोचों सपनों, 3 मनुष्य की जबान (भाषा)
4-शब्दों, 5-नर्क, 6-व्याक्ति, 7-फंसा हुआ, 8-संकुचन, कष्ट, दुख
9-पूर्ण, 10-जीवन के दुख, 11-धीमा-धीमा नशा

औराक़े किताबे दिल[1] पलटाके बहुत रोए
हम तेरी कहानी को दोहराके बहुत रोए

लुटने का सबब[2] अपने बतलाके बहुत रोए
दुनया के करम[3] दिल को गिनवाके बहुत रोए

अन्जामे मुहब्बत[4] पर रोके न रूके आँसू
वो मेरी कहानी को दोहराके बहुत रोए

अल्लाह-रे[5] इस दिल का आलम[6] तेरे जाने पर
बहला तो लिया लेकिन बहलाके बहुत रोए

क्या गुज़री[7] है उस दिल पर बस ये तो खुदा जाने
हाँ हम शबे फ़ुर्क़त[8] में घबराके बहुत रोए

1-मन की पुस्तक के पृष्ठ, 2-कारण, 3-दुनया की कृपाएं, 4-प्रेम के समापन, 5-हे राम, 6-'स्थिति, दशा, 7-बीती, 8-विरह की रात

और तो सब हैं मेरे नाम से कटने वाले
चन्द[1] काँटे है ये दामन[2] से लिपटने वाले

याद आते हैं मुझे दूर के मन्ज़र[3] की तरह
मेरी बाहों मेरे पहलू[4] में सिमटने वाले

करके अश्कों[5] से वुज़ू[6] बैठ के तन्हाई[7] में
रटते रहते हैं तेरे नाम को रटने वाले

एक-एक कर के उम्मीदों[8] के दिये[9] बुझने लगे
सोज़ ये ग़म के अन्धेरे नहीं हटने वाले

आग की पगड़ियाँ बाँधे हुए बैठे है चराग[10]
ज़र्बे-ज़ुल्मात[11] से भी सर नही फटने वाले

1-थोड़े से, कुछ एक, 2-आँचल, पल्लू, 3-दृष्य, 4 करवट, बगल
5-आँसुओं, 6-हाथ-मुहँ धोना, 7-एकान्त, 8-आशाओं, 9-दीपक
10-दीपक, 11-अन्धेरे की मार

कभी जुदा दो बदन[1] हुए तो तो दिलों पे ये दो अज़ाब[2] उतरे
बिछड़ने वाले की याद आई मिलन के आँखों में ख़्वाब उतरे

बढ़ी है फ़िक्रे मआश[3] जब से मेरे ख़्यालों की वादियों[4] में
न उसके चेहरे का चाँद उतरा न आरिज़ों[5] के गुलाब उतरे

उलझ गया ज़िन्दगी के काँटे में इत्तेफाक़न[6] हमारा दामन
ज़मीं के गोले पे सैर[7] करने को हम जो ख़ाना ख़राब[8] उतरे

जिन्होंने माँगी उन्हें तो दी ही गई जहाँ[9] में खुशी की दौलत[10]
बग़ैर[11] माँगे भी काहिलों[12] पर फ़लक[13] से ग़म बे हिसाब[14] उतरे

चली जो आँधी तो हर कली ने झुका के सर को ये इल्तेजा[15] की
चमन[16] के मालिक हमारे रूख़[17] से अभी न रंगे शबाब[18] उतरे

1-शरीर, 2-दुख, 3-आजीविका की चिन्ता, 4-घाटियों, 5-गालों
6-बाई चान्स, 7-भ्रमण, 8-उजड़े हुए लोग, 9-संसार, 10-पूँजी
11-बिना, 12-आलासियों, 13-आकाश, 14-अगाणिंत, 15-निवेदन
प्रार्थना, 16-वाटिका, 17-मुख, वदन, चहरा, 18-यौवन का रंग

हाथों के लिए बर्गे हिना[1] ढूँढने वाले
नाकाम पलट आए वफ़ा[2] ढूँढने वाले

अब हम को किसी घर किसी कूचे[3] की ख़बर क्या
हैं हम तो खुद अपना ही पता ढूँढने वाले

आज़ारे मुसलसल[4] है ये इनसान का जीवन
थक जांएगे इस दुख की दवा ढूँढने वाले

सीने से लगा लेते हैं हर मौजे बला[5] को
हर ग़म में तेरे ग़म का मज़ा ढूँढने वाले

रख आँख में मन्जिल[6] की तमन्ना[7] का उजाला[8]
हर मोड़ पे रस्ते में दिया[9] ढूँढने वाले

1-मेंहदी के पत्ते, 2-साथ देने की भावना, 3-गली की, 4-अनवरत दुख निरस्तर दुख, 5-मुसीबत, दुख की तरंग, 6-गनतव्य, लक्ष्य 7-अरमान, इच्छा, शौक़, 8-प्रकाश, 9-दीपक

अब ख़िज़ाँ[1] आए या बहार[2] आए
कोई मौसम तो साज़गार[3] आए

हमने हारी थी इश्क़[4] की बाज़ी[5]
लोग तो हौसले[6] भी हार आए

रख के उस दर[7] पे सर उठाते क्या
आज ये बोझ भी उतार आए

अब वो लम्हे[8] हैं रास्तों के चराग़[9]
तेरी धुन[10] में जो हम गुज़ार[11] आए

है ये शोला[12] तो कोई बात नहीं
दिल अगर है तो फिर क़रार[13] आए

'सोज़' पल पल बदलती दुनया पर
किस तरह दिल को ऐतबार[14] आए

1-पतझड़, ऋतु, 2-वसन्त ऋतु, 3-अनुकूल, 4-प्रेम आसक्ति
5-पारी, दाव, खेल, 6-साहस, 7-द्वार, 8-क्षण, 9-दीप
10-ध्यान, 11-गुज़ार आए व्यतीत कर आए, 12-आग की लपट
13-ठहराव, स्थिरता, 14-भरोसा, विश्वसनीयता

खिल के फूलों ने वह क्यारी कभी महकाई भी
रंग छलकाती हुई सुब्हे बहार[1] आई भी

मेरे आने के तअल्लुक़[2] से तुम्हें याद रहे
मेरे साथ आएगी चलकर मेरी रूस्वाई[3] भी

ख़त्म[4] होती है जो मिलते ही बिछड़ जाने पर
उसने अपनी वह कहानी कभी दोहराई भी

जिसने तन्हा[5] मुझे छोड़ा था उसी ने अक्सर
अपनी यादों से सजाई मेरी तनहाई[6] भी

तीसरी राह[7] नहीं कोई करोगे क्या तुम
जीने मरने से तबीअत[8] अगर उकताई[9] भी

1-वसन्त ऋतु की भोर, 2-सम्बन्ध में, विषय में, 3-बदनामी
4-समाप्त, 5-अकेला, 6-एकाकीपन की स्थिति, 7-रास्ता
8-मन, 9-उकताई भी, ऊब भी गई

हयात[1] अक्सर[2] मताए ऐश[3] इनसाँ[4] पर लुटाती है
मगर दुख दे के पहले आदमी को आज़माती[5] है

लगा रखखा है सीने से[6] यह दिल इस वास्ते[7] मैंने
के इस साज़े दरूना[8] से तेरी आवाज़ आती है

दिलों को मोहने की बात लफ्ज़ों[9] में नहीं होती
मुहब्बत अपना कल्मा[10] मस्त नज़रों[11] से पढ़ाती है

यक़ीनी[12] है सुकूने दिल[13] की बर्बादी[14] मुहब्बत में
तबीअत[15] कब मगर इस मशग़ले[16] से बाज़[17] आती है

जुनूँ[18] की आबरू[19] क़ायम[20] है जिन से वो यही तो हैं
मेरे दामन[21] के टुकड़े जिन पे दुनया मुस्कुराती है

1-ज़िन्दगी, 2-अधिकतर, 3-आनन्द की पूँजी, 4-मनुष्य 5-परखती है, 6-छाती से, 7-इस लिए, 8-भीतरी वाद्य यंन्त्र से, 9-शब्दों, 10-पाठ (भावार्थ), 11-मादक, दृष्टियों से, 12-निश्चित, 13-मानसिक शान्ति, 14-विनाश, 15-मन 16-कार्य, 17-बाज़आती है, रूकती है, 18-पागलपन, 19- इज़्ज़त गरिमा, 20-स्थित, 21-पल्लू

अब सदा[1] कोई नहीं सुनता किसे आवाज़ दूँ
हो गया सारा जहाँ[2] बहरा किसे आवाज़ दूँ

धूप में हालात की जलता हुआ एक पेड़ सा
सोचता हूँ मैं खड़ा तन्हा किसे आवाज़ दूँ

अपनी पलकों पर उठाले जो मेरे अश्कों[3] का बार[4]
दूर तक कोई नहीं ऐसा किसे आवाज़ दूँ

आज अपनी उलझनों की डोर सुलझाने को मैं
मश्वरा दे अय ग़मे दुनया[5] किसे आवाज़ दूँ

ज़िन्दगी की खोज में जो खो गई वह ज़िन्दगी
ढूँढलाने के लिए बतला किसे आवाज़ दूँ

जिसके साज़े-दिल[6] पे मेरे दर्द का नग़मा[7] सजे
कौन है दर्द आश्ना[8] ऐसा किसे आवाज़ दूँ

1-पुकार, 2-संसार, 3-आँसुओं, 4-भार, 5-हे संसार के दुख
6-मन के बाजेपे, 7-गीत, 8-दुख दर्द को समझने वाला

बेदिली[1] से इस खराबे[2] में पड़ा जीना मुझे
रास[3] तो आई नहीं ये कज अदा[4] दुनया मुझे

शोहरते दीवानगी[5] है नामुकम्मल[6] आज भी
ऐ जुनूने-शौक़[7] थोड़ा और कर रूस्वा[8] मुझे

हो गई जुमला[9] मताए-उम्र[10] नज़रे-ज़िन्दगी[11]
किस क़दर मंहगा पड़ा ये ज़िन्दगी जीना मुझे

जो कभी टूटे नही हिम्मत-शिकन[12] हालात में
हो अता[13] ऐसा मिसाली हौसला[14] मौला[15] मुझे

थी यकीं[16] की राह छोटी इसलिए लगता है अब
अक़्ल[17] के रास्ते से मन्ज़िल[18] का सफ़र[19] लम्बा मुझे

1-दिल न चाहते हुए भी, 2-उजाड़ में, 3-माफ़िक, अनुकूल
4-बेमुरव्वत, अख्खड़ बे वफा, 5-पागलपन की ख्याति है
6-अपूर्ण, 7-है लक्ष्य को पाने के पागलपन, 8'बदनाम
9-सम्पूर्ण, 10-आयु की पूँजी, 11-जीवन पर न्योछावर
12-हिम्मत तोडने वाले, 13-प्रदान किया जाए, 14-साहस
15-मालिक, स्वामी, 16-विश्वास, 17-बुद्धि, 18-गन्तव्य
19-यात्रा

बहते पानी की तरह, मौजे सदा[1] की सूरत[2]
सूए मन्ज़िल[3] है रवां[4] लोग हवा की सूरत

जा-दए ज़ीस्त[5] पे इन्सान के आगे पीछे
हादसे[6] घूमते रहते हैं क़ज़ा[7] की सूरत

हश्र के रोज़[9] से पहले भी तो मैं दावरे हश्र[10]
ज़िन्दगी काट के आया हूँ सज़ा की सूरत

दर्द को, दिल के, मिटाने के लिए मैं अब तो
रोज़ लेता हूँ तेरा नाम दवा की सूरत

खोज इस दौरे खराबी में कोई खूबी 'सोज़'
नस्ले आदम[11] के लिए कोई बक़ा[12] की सूरत[13]

1-स्वर तरंग, 2-भाँति, 3-गन्तव्य की ओर, 4-गतिशील 5-जीवन के मार्ग, 6-घटनाएं, 7-मौत, काल, 9-न्याय के दिन से पहले, 10-न्याय करने वाले, 11-मानव जाति, 12-अमरता का, 13-अवसर, स्थिति

लोग इस तरह भी आज यहाँ महवे यास[1] हैं
होंटो पे क़हक़हे[2] हैं मगर दिल उदास हैं

आओ कि हँस के फूल की सुन्नत अदा करें[3]
खुश्याँ लुटाएं ग़म तो यहाँ सब के पास हैं

मौसम ने लाख फूल खिलाए तो क्या हुआ
तुम से बिछड़ने वाले तो अब भी उदास है

हम तो ये जानते हैं ये अय्यामे-ज़िन्दगी[4]
हस्ती[5] की मय[6] के सागरो जामों गिलास[7] है

राहे तलब[8] में दिल की तबाही[9] सही मगर
देखेंगे कितने तीर ज़माने[10] के पास हैं

1-निराश, 2-ठहाके, 3-फूल की सुन्नत अदा करें, फूल की भाँति जिये, 4-जीवन के दिन, 5-जीवन की, 6-मदिरा, 7-गिलास और पियाले है, 8-चाहत के मार्ग में, 9-बरबादी, विनाश, 10-दुनया संसार

इनसाँ[1] हवस[2] के रोग का मारा है इन दिनों
बेलौस[3] रब्त[4] किस को गवारा[5] है इन दिनों

महरूमियों[6] को मान के तक़दीर[7] का लिखा
दिल से ग़मों का बोझ उतारा है इन दिनों

कूचे[8] में ज़िन्दगी के तलाशे सुकून[9] में
एक जुग भटक के मैंने गुज़ारा है इन दिनों

मौज़ूँ[10] है वक़्त आमदे तूफ़ान[11] के लिए
कश्ती से मेरी दूर किनारा है इन दिनों

दिल अब मेरा दिमाग़ के ताबे[12] है इसलिए
जीना तेरे बग़ैर गवारा है इन दिनों

1-मनुष्य, 2-भोग, 3-निस्वार्थ, 4-सम्पर्क, 5-स्वीकार, 6-वंचनाओं 7-भाग्य, 8-गली में, 9-शान्ति की खोज, 10-उपयुक्त, 11-आमदे तूफान, 12-आधीन

मन्ज़िल की तरफ जाने से किस किस को न रोका
कल साए ने दीवार के दीवार से पहले

आवाज़ न थी कोई खामोशी के मुकाबिल[1]
इस पाओं की ज़न्जीर की झनकार से पहले

जिस शहर में पहुँचा हूँ मेरा देखा गया है
मेयारे रिहाइश[2] मेरे किरदार[3] से पहले

बे काविशो मेहनत[4] नहीं मिलता यहाँ दाना
पर-वाज़[5] को पर खोलिये मिनक़ार[6] से पहले

जो बात ज़रूरी थी उसी बात पे आकर
लब[7] सिल गए इस बार भी इज़हार[8] से पहले

नज़रों की तहारत[9] के लिए अश्क[10] बहाकर
आँखों का वुज़ू[11] करते है दीदार[12] से पहले

1-समक्ष, 2-रहन सहन का स्तर, 3-चरित्र, 4-बिना प्रयास व परिश्रम
5-उड़ने को, 6-चोंच, मुख, 7-होंट, 8-अभिव्यक्ति, 9-पवित्रता
10-आँसूं, 11-अंगों को धोना, 12-दर्शन

बोली ग़ुरूर[1] की वह बशर[2] बोलने लगा
लहजे[3] में मालोज़र[4] का असर[5] बोलने लगा

है ये दुरूस्त[6] खुल न सके उसके बन्द लब
चेहरा तो दिल की बात मगर बोलने लगा

गिरते हैं फूल शाख़[7] से या तो ये टूटकर
या नर्म गर्म बोल शजर[8] बोलने लगा

तिकमीले फन[9] तो हो गई, अशआर[10] में मेरे
इनसानियत[11] का दर्द मगर बोलने लगा

डाली जो मैंने उस पे तजस्सुस भरी नज़र[12]
बातें गए[13] दिनों की खंडर बोलने लगा

1-अहंकार, 2-बशर-आदमी, 3-शैली, 4-धन सम्पत्ति, 5-प्रभाव
6-उचित, 7-डाल, 8-वृक्ष, 9-कला पूर्ण, 10-शेरों में, पंक्तियों में
11-मानवता, 12-खोजी दृष्टि, 13-बीते

परख ले उसको चुने जिसको दोस्ती के लिए
ये एहतियात[1] ज़रूरी है आदमी के लिए

ग़मों को भूल के जीने की दिल में ठानो तो
बहुत हैं ज़ीस्त[2] में गुन्जाइशे[3] खुशी के लिए

बदल भी सकती हैं कल नफ़रतें मुहब्बत में
तुम अपना हाथ बढ़ाओ तो दोस्ती के लिए

सलाम सुब्ह[4] की जानिब[5] से उन चराग़ों[6] को
जले जो शब[7] के अंधेरे में रौश्नी के लिए

हम इस के बाद नई जुरअते[8] हयात के साथ
अदम[9] को जांएगे एक और ज़िन्दगी के लिए

1-बचाव, 2-जीवन, 3-रिक्त स्थान, अवकाश, 4-भोर, 5-ओर
6-दीपकों, 7-रात, 8-जीने के नवीन साहस, 9-परलोक

गर्म लू किसको किसे सर्द[1] हवा कहते हैं
सब बता देती है दुनया किसे क्या कहते हैं

हम वहाँ हैं जहाँ कमज़ोर को आजिज़[2] बन्दा[3]
और शहज़ोर[4] को बन्दों का[5] खुदा कहते हैं

तंगदस्ती[6] है रहे ज़ीस्त[7] का वह मोड़ जहाँ
आके हम मौत को हर दुख की दवा कहते हैं

अपनी कमज़ोरियाँ दुनया से छुपाने को लोग
अपनी नाकामी[8] को क़िस्मत[9] का लिखा कहते हैं

ज़िन्दगी होश[10] के आलम[11] का है पुरकैफ़[12] सफ़र[13]
फिर भी ना फ़हम[14] मगर इस को सज़ा[15] कहते हैं

1-ठन्डी, 2-अक्षम, 3-दास, गुलाम, 4-शक्तिशाली, 5-गुलामों का
6-दरिद्रता, 7-जीवन के मार्ग का, 8-विफलता, 9-भाग्य, 10-चेतना
11-अवस्था, 12-आनन्द दायक, 13-यात्रा, 14-ना समझ, मुर्ख, 15-दण्ड

बारहा[1] जीते हुए मोर्चे[2] हारे मैंनें
आस्तीनों में पले साँप न मारे मैंने

मेरी तक़दीर[3] ने तदबीर[4] के पर काट दिए
चूमना चाहे बहुत उड़के सितारे[5] मैंने

बूए नग़मात[6] लुटाने लगे जज़्बात[7] के फूल
दामने लफ़्ज़[8] पे रखकर जो सँवारे मैंने

सख़्त[9] तूफान में भी हौसले[10] वालों की कभी
दूर कश्ती से नहीं पाए किनारे मैंने

सोज़' काँटे की तरह चुभते हुए लम्हे[11] भी
खिलते फूलों की तरह हँस के गुज़ारे[12] मैंने

1-अनेको बार, 2-रणक्षेत्र, 3-भाग्य, 4-प्रयास, 3-नक्षत्र, 4-गीतों का गंध
5-भावनाओं, 6-शब्दों के पल्लू पे, 7-भीषण, 8-हिम्मत, साहस, 9-, क्षण
10-व्यतीत किये

लोगों का तो है ये उसूल[1]
देना काँटे लेना फूल

बद ख़बरी[2] से पुर[3] अख़बार
रोज़ाना[4] का है मामूल[5]

तुम अपनी धुन में मुदग़म[6]
काम में अपने हम मश्गूल[7]

झूटों का इन्साफ़[8] है ये
सच्चे हैं सब नामाक़ूल[9]

जीना सीख ऐ[10] आदमज़ाद[11]
ज़ुल्म[12] को मत दे इतना तूल[13]

1-नियम, 2-कु समाचार, 3-परिपूर्ण, 4-प्रतिदिन, 5-निश्चित कर्म
6-खोये हुए लीन, 7-व्यस्त, 8-न्याय, 9-बुद्धि विहीनता में लिप्त
10-हे, 11-मनुष्य के वंशज, 12-अत्याचार, 13-बढ़ावा

दौलत[1], इज़्ज़त[2] इल्म[3] अगर है
जीवन एक पुर कैफ़[4] सफ़र[5] है

सब लुट जाने पर अब तक भी
मोती[6] सा एक पलकों पर है

देख मेरे हालात का ज़िन्दाँ[7]
कोई दरीचा[8] है ना दर[9] है

दुनया सी बेमानी शय[10] के
छिन जाने का किस को डर है

माना मैं बे घर हूँ लेकिन
इस दुनया में किस का घर है

सोज़' न बदली दुनया अब भी
नेज़े[11] पर सच्चे का सर है

1-धन, पैसा, 2-मान सम्मान, 3-एजुकेशन, शिक्षा, ज्ञान, 4-आनन्द दायक, 5-यात्रा, 6-माणिक, 7-हालात का ज़िन्दा-परिस्थितियों का कारागार, 8-छोटी खिड़की, 9-कपाट रहित बड़ा खुला गेट 10-निरर्थक वस्तु, 11-बरछा, भाला

मैदाँ में अब तो आप सरों को उछालिये
अफ़वाज़े दुशमनाँ[1] ने तो नेज़े[2] उठालिये

दुनया कहे के हाँ इसे कहते हैं ज़िन्दगी
इस अरसए हयात[3] को ऐसा उजालिये[4]

मर्दानावार उठाईये हँस-हँस के बारे ग़म[5]
रो-रो के ग़म मनाने की आदत न डालिये

आती है मौत जिस्म को मरती नहीं है रूह[6]
ये कह के ख़ौफ़[7] मौत का दिल से निकालिये

कश्ती हवा के रूख़[8] पे रखी या ख़िलाफ़े रूख़[9]
बहरे तलब[10] में उसने किनारे तो पा लिये

1-शत्रुओं की सेनाओं, 2-भाले, शस्त्र, 3-जीवन के कालाँश
चमकाइये, 5-हँस-हँस के दुख का भार पुरूषों की तरह उठाइये
6-आत्मा, 7-भय, 8-हवा चलने की दिशा में, 9-उल्टी दिशा
10-लक्ष्य के समुद्र

नज़्में दुनया[1] संभालने को उठो
दश्ते गेती[2] उजालने[3] को उठो

कारवाने हयाते इनसाँ[4] को
तीरगी[5] से निकालने को उठो

ये जो धरती पे आज रक्साँ है[6]
इन बलाओं[7] को टालने को उठो

ना वके ज़ुल्म[8] के जवाब में तुम
ज़ख़्म[9] सीने में पालने को उठो

सोज़ हालात को बदलने की
बात ज़हनों[10] में डालने को उठो

1-संसार की व्यवस्था, 2-दुनया के खराब हालत में पड़े स्थान को, 3-ज्योतित, जगमगाने, 4-मानव जीवन के काफले को 5-अंधकार, 6-नाच रही हैं, आपदाओं, 8-अत्याचार के बाण 9-घाव, 10-सोचों में, मन मस्तिष्क में

हयात बादे फ़ना[1] अब मुझे कभी न मिले
मैं जी चुका हूँ, मुझे और ज़िन्दगी न मिले

खुशी हवा की तरह दस्तयाब[2] हो सबको
न हो यहाँ कोई ऐसा जिसे ख़ुशी न मिले

रवाँ निज़ाम[3] को बदलो अगर ये ख़्वाहिश[4] है
ग़मों की आग में जलने को ज़िन्दगी न मिले

ये मत कहो कि दरिन्दे[5] हैं सिर्फ़[6] जंगल में
मुझे तो शहर के अन्दर भी आदमी न मिले

खराब हाल[7] हूँ अय्यामे बद नसीबी[8] में
थी जिनको मुझ से मुहब्बत वो सरसरी[9] न मिले

1-मरणोंपरान्त जीवन, 2-प्राप्त, 3-वर्तमान व्यवस्था, 4-इच्छा 5-हिंसक पशु, 6-केवल, 7-बुरी स्थिति में हूँ, 8-दुर्भाग्य के दिनों में, 9-बच के मिलना

क़वी[1] हो इतना तो दुनया में दोस्ती का वुजूद[2]
गिराँ[3] किसी को न गुज़रे[4] यहाँ किसी का वुजूद

फ़ज़ा[5] में बिखरेंगे कब तक ये ख़ून के छींटे
पलेगा खौफ़[6] में कब तक हर आदमी का वुजूद

ये ख़ैरोशर[7] की कहानी अभी अधूरी है
इसीलिये अभी क़ायम[8] है आदमी का वुजूद

बढ़ेगी फ़िक्रे बशर[9] में ख़ुलूस[10] की गर्मी
घुलेगा बर्फ़ की मानिन्द[11] दुश्मनी का वुजूद

ज़मीं को खून मे नहला के शर पसंद[12] अभी
ख़ुला[13] में ढूंढने निकले हैं ज़िन्दगी का वुजूद

1-सुदृढ, 2-अस्तित्व, 3-अस्वीकार्य, 4-लगे, अनुभव न हो
5-वातावरण, 6-भय, 7-भलाई बुराई, 8-स्थित, शेष
9-मनुष्य की सोच, 10-सच्चा प्यार, 11-भाँति, 12-बिगाड़ उत्पन्न करने वाले, 13-आकाश में खाली स्थान-वैक्यूम

मुतफ़र्रिक़ात[1]

उन गज़लों और नज़्मों की सुन्दर पंक्तियाँ जिन्हें कारण वश इस संकलन में शामिल नहीं किया।

उसने दीवार तो नफ़रत की उठाई थी मगर
रखने वालों ने रखी सोज़ मुहब्बत क़ायम

रात कितनी भी हो तारीक[2] गुज़र जाती है
आदमी रक्खे ज़रा हौसला हिम्मत क़ायम

दाव पर मैंने लगाई ज़िन्दगी जिसके लिए
सैंकड़ों ग़म आज उस दुनया को अपनाने में है

तड़प पैहम[3] नहीं है बेकली[4] कम होती जाती है
मद्द ऐ शोलए ग़म[5] आँच मध्धम होती जाती है

अब तो अशफ़ाक़ का सीना है भगत की गोली
रक्खी होगी कभी दोनों ने रिफ़ाक़त[6] क़ायम

मरकर भी इस की ख़ाक[7] के अन्दर समा गए
लेकिन न इस वतन से निकलने की बात की

1-विभिन्न, 2-अंधेरी, 3-निरन्तर, 4-व्याकुलता, 5-दुख की आग की लपट, 6-दोस्ती, 7-मिट्टी, धूल

दिन नहीं निकला उजाला नहीं फैला जब तक
ज़ुल्मते शब[1] दिले इनसां[2] को डराती ही रही

चले आते हैं ग़म में अश्क[3] पलकों के किनारे पर
ये तूफाँ जब भी आता है इसी साहिल[4] से आता है

बख़्शी[5] है ज़िन्दगी ने जिन्हें ग़म की तेज़ धूप
वो अब तलाश सायाए दीवार[6] क्या करें

मन्ज़िल का रास्ता तो बहुत साफ़ था मगर
थी मसलहत[7] की बीच में दीवार क्या करें

लाख ठोकर पे हवाओं ने उड़ाया लेकिन
आरज़ू[8] रेत पे एक नक़्श[9] बनाती ही रही

किस लिए सर पे मेरे नाच रही है उसरत[10]
जीस्त[11] के सर पे ये इफ़लास[12] का साया क्यों है

सोचता रहता हूँ अक्सर[13] मैं बावक़्ते फ़ुर्सत[14]
मेहरबाँ[15] मुझ पे वबाले ग़मे दुनया[16] क्यों है

उन्हें कुछ गिराँ न गुज़री ये हवा की तेज़ गामी
जो तुम्हारी राह में थे वो चराग जल रहे है

1-रात की कालिमा, 2-मानवमन, 3-आँसू, 4-किनारे से 5-दी है, 6-दीवार की छाया, 7-लाभ हानि को ध्यान में रखकर बनाया गया प्रोग्राम, 8-लगन, 9-आकृति, 10-अभाव की स्थिति, 11-ज़िन्दगी, 12-गरीबी, 13-अधिकतर, 14-खाली समय में, 15-कृपावान, 16-सांसारिक दुखों का भार

शायरों और विद्वानों की राय

Blank

तहरीरों के अंश:

● **पदम श्री कशमीरी लाल ''ज़ाकिर''** (चण्डीगढ़)
(सेक्रेट्री हरियाणा उर्दू अकादमी)

जब उन्होंने अपने कलाम[1] के कुछ नमून मुझे भेजे तो मैं उनके शायराना जौहर[2] का क़ायल[3] हो गया।(अज़राब पृष्ठ 28)

● **प्रित पाल सिंह बेताब** (जम्मू)

सोज़ नजीबाबादी दकन[4] के जाने माने उर्दू शायर हैं आप को गज़ल की बारीकियों पर क़ुदरत[5] हासिल है सोज़ साहब नज़्म पर भी अच्छी खासी क़ुदरत रखते हैं।

('एतमाद' दैनिक हैदराबाद)

● **बशर नवाज़** (औरंगाबाद)
(सागर सरहदी की फिल्म 'बाज़ार' के गीतकार और टी.वी. सीरियल अमीर सुसरो के स्क्रिप्ट राइटर)

सोज़ नजीबाबादी तर्बियत याफ़्ता ज़हन के मालिक[6] हैं इन्होंने दरसी तालीम के अलावा उर्दू के मुख़तलिफ़ असातज़ा[7] की सोहबतों से फ़ैज़ हासिल[8] किया है यही वजह है कि इनकी गज़लों, नज़्मों में मिसरों की बस्तो कुशाद[9] में एक किस्म[10] का सजीला पन नज़र आता है सोज़ साहब शेर बहुत सोच समझ कर और महसूस करके कहते हैं।

जहाँ तक ज़बानो बयान[11] का मामला है तो इसमें वो उस्तादाना[12] दर्जा रखते हैं।

('एतमाद' दैनिक हैदराबाद 2015)

• प्रोफ़ेसर मजीद बेदार

(अध्यक्ष उर्दू विभाग उस्मानिया यूनिवर्सिटी हैदराबाद)

ग़ज़ल के रिवायती अन्दाज़ में असरी हिस्सेयात[13] को शामिल करके जदीद लबो लहजे[14] के साथ शायरी करने वाले चन्द मुन्तख़ब[15] शायरों में सोज़ नजीबाबादी का शुमार[16] होता है ('अज़राब' पृष्ठ 6 से)

• सय्यदा नसरीन नक़्क़ाश

(चेयरपर्सन उर्दू कल्चरल सोसाइटी
सम्पादक बैनुल अक़वामी सदा[17] मासिक, श्री नगर कश्मीर)

सोज़ की शायरी में इस्तेहसाली[18] कुव्वतों की चीरा दस्तियों[19] की कहानी भी है - लोगों की धुआँ-धुआँ उमंगों, तमन्नाओं[20] और आरज़ुओं[21] की दास्तान भी है - सोज़ की शायरी में एक वक़ार[22] है । उन्होंने अपनी शायरी को मुतवाज़ुन[23] रखते हुए शेरी इरतेक़ा[24] की मन्ज़िलें तय की हैं, कलाम में ताज़गी, सलासत[25], सोज़ो गुदाज़[26] और फ़िकरी आराइश[27] के उम्दा[28] नमूने दस्तयाब[29] हैं। इनकी शायरी में पुख़तगी[30], जमालयाती अहसास[31], गिर्दो पेश[32] की गहरी वाक़फ़ियत[33], फ़न[34] पर मुकम्मल दस्तरस[35] और फ़िक्र की फ़रावानी[36] पाई जाती है।

('एतमाद' दैनिक हैदराबाद)

• डा0 ताबिश मेहंदी (दिल्ली)

जनाब सोज़ नजीबाबादी एक कोहना मश्क़[37] और क़ादिरूल कलाम[38] शायर हैं, मजमूई[39] तौर पर सोज़ नजीबाबादी की शायरी एक अच्छी और दिलकश शायरी[40] है। इसमें क़ारी[41] के लिए आह का सामान भी है और वाह का भी।

(पेश रफ़्त मासिक पत्रिका-दिल्ली के दिसम्बर 2014 के अंक से)

• वसीउल्ला हुसैनी (लखनऊ)

इन के अशआर[42] दिल के तारों को छेड़ने और इन्सानी जज़्बात[43] को मुताहर्रिक[44] करने की पूरी सलाहियत[45] रखते हैं अन्दाज़े बयान[46] सुबुक[47] और सादा है सोज़ नजीबाबादी ताज़ा फ़िक्र[48] पाकीज़ा ज़ौक[49] व मुनफ़रद लबो[50] लहजे के शायर हैं।

(उ0प्र0 उर्दू अकादमी की मासिक पत्रिका ''नया दौर'' के जनवरी 2015 के अंक से)

• अल्लामा अबरार किरतपुरी (दिल्ली)

(उर्दू पिंगल के ज्ञाता, उरूज़दाँ)

अच्छे कलाम की खुसूसियत ये है कि चाहे वो किसी भी बहर[51] में हो, मौज़ूँ तरीके से नज़्म[52] किया गया हो और शायरी के तमाम महासिन से मुज़य्यन और मआइन से पाक[53] हो- अज़राब एक खुश[54] कलाम और बालिग़ नज़र[55] शायर का मजमूआ ए[56] कलाम है इस लिये तमाम महासिने[57] शेरी से आरास्ता[58] और मआइन से पाक[59] है

1-कविता, 2-काव्य कौशल, 3-मानने वाला, 4-दक्षिण, 5-नियन्त्रण प्राप्त है, 6-सूझ-बूझ वाले मन के स्वामी हैं, 7-स्कूली शिक्षा के अतिरिक्त उर्दू के विभिन्न गुरूओं की, 8-संगति से लाभ प्राप्त किया है, 9-पांक्तियों की खोल-बाँध में, 10-प्रकार, 11-बात कहने के ढंग और भाषा, 12-गुरूओं की श्रेणी में आते है, 13-परम्परागत शैली में युग बोध, 14-नवीन स्टाइल, 15-गिने चुने, सलैक्टेड, 16-गणना, 17-अन्तर्राष्ट्रीय स्वर, 18-पोषण करने वाली शक्तियों, 19-प्रभुत्व, 20-इच्छाओं, 21-अभिलाषाओं, 22-भारी भरकम पन, 23-सन्तुलित, 24-काव्य विकास, 25-सफाई, 26-दर्द और नर्मी, 27-वैचारिक साज सज्जा, 28-उत्कृष्ट नमूने, 29-उपलब्ध, 30-परिपक्वता, 31-सौन्दर्य बोध, 32-आगे पीछे, 33-गहन जानकारी, 34-कला, 35-पूरी पकड़, 36-सोच की बहुतायत, विचारों की रेल पेल, 37-वरिष्ट अभ्यस्त, 38-दक्षता प्राप्त, 39-कुल मिलाकर, 40-मनमोहक, 41-पाठक, 42-पांक्तियाँ, 43- मानवीय भावनाओं, 44-आन्दोलित, 45-योग्यता, 46-बात कहने का प्रकार, 47-हल्का-फुलका, 48-नवीन सोच, 49-पवित्र स्वाद (होलीटेस्ट), 50-सबसे अलग ढंग से बात कहने के स्टाइल, 51-मीटर, 52-लयबद्ध तरीके से छन्द बद्ध, 53-अलंकरणों से सुसज्जित और त्रुटि रहित हो, 54-अच्छे रचनाकार, 55-परिपक्व दृष्टि वाले, 56-काव्य संकलन, 57-काव्य सौन्दर्यों, 58-सुसज्जित, 59-और त्रुटि रहित है।